

Item Code:

642

Participant Code:

320

विषय : मुझे भी है एक सपना ।

जादू का आग

गान में ललितता संग के चादर । मुझे के विना प
जांच भरा भूव । सब जादू, खून, स्थाप के लिए चिल्लाक,
कृष, व्यास । गरीबी की लहरों में डूब जाये थे उस
शहर की सारी जीवन ।

उस सासूम जीवनो से एक थे आपिशा । मुझे के
कारण सब कुछ खो गइये थे । आपिशा की जीवन में
अपनी माँ के फलावा और कुछ भी नहीं थी । उस शहर
की खराब किसमत ने आपिशा जैसे, बहुत नन्ही जीवनो
से अपनी अपने और खवापिशों चीने लिये थे ।

फलेशोक :- [कुछ महीने पहले]

आपिशा की दिल खूशी से डूम रही थी । पहली
बार स्कूल जाने का खुशी तो आसमानों से भी
अंचे थे ।

आपिशा : माँ ... जल्दी तैयार हो जाओ ना । मैं
तबसे आपकी इंतजार कर रही हूँ । मुझे घर
नहीं होनी है आज ।



63-ആം
കേരള സ്കൂൾ
കലോത്സവം
2025 ജനുവരി 4 മുതൽ 8 വരെ
തിരുവനന്തപുരം

Item Code:

642

Participant Code:

320

माँ : हाँ मेरी बच्ची । तोड़ी सबर रखो । मैं अभी
आयी ।

आपिशा : आपको पता है न , मुझे स्कूल जाने का
कितना शौक है । स्कूल जाकर , पढकर एक
बड़ी बड़ी व्यक्ति बन जाऊँगी । आप देखना

माँ : बेशक मेरी जान । आखिर क्या बनना है
तुम्हको ?

आपिशा : मैं एक डॉक्टर बनूँगी । समाज की सेवा
करना , मेरी एक इच्छा है । अब चलो ना , मैं
घरे दौ रही हूँ ।

अपनी माँ की हाथ पकड़कर , ~~मुझे~~ मुसकराते हुए

जा रही थी आपिशा । उसकी मासूमियत का गहरा

स्पर्श वा सब जादू । आपिशा की आँखों में स्वापिशा

और दिल में उम्मीत थे । उस नन्ही बच्ची की

मन दृढ़ संकल्प से ढक रही थी । [फलेशॉक खतम]

उस खुशिया से विदा कहकर आज दो महीने हुए हैं ।

पूछ का संदर्भ बढ़ते जा रहा था और आपिशा



Item Code: 642

Participant Code: 320

का सपना दूढ़ रहा था। उस लड़की का मन सपनों
के मयार पर जला हुआ चिराग थी पर किसमत
ने उस चिराग को अंधेरा में फेंक दिया।
हाक रान, फुहू के सवर्ष को नाड़ी आशवास थी।
चांद - सितारे, बादलों के पीछे से जग फुल रहे
वो भूख, प्यास, दूढ़ हुआ पंक और दूढ़ हुआ पंक की
तीव्रता से लड़ रही थी आधिशा और उसकी माँ।
निरजीवन आवाज़ से आधिशा ने माँ से पूछा।
आधिशा : माँ, मुझे स्कूल कम जा क पाहागा?
भूख और प्यास का असर ~~क्या~~ का निशान उस
निरजीवन आँखों में नदी थे। बल्की, सपनों का
निशान उस निरजीवन आँखों में चमक रहे थे।
माँ की दिल दहलार बार दूढ़ा। उसकी बच्ची
की इच्छा पूरी न करने का संकल्प उसको खा रहा था।
आधिशा क्या कर सकती हैं वो? फुहू ने अपनी
खेदगी की उम्मीद, चाहत, हसी ... और सब कुछ
चीन लिये थे। माँ ने आधिशा को ~~अँखों~~ से



Item Code:

642

Participant Code:

320

नगर मिलकर कड़ा, मजबूर आवाज़ से...

माँ : सब करो मेरी बच्ची। जब तक मेरी दिल में
खून है, ~~बड़े~~ शरीर में साँस है, दिमाक में होशियारी
है, तब तक मैं लम्हारे लिफ लडूंगा। तू लम्हारी
सपना पूरे करने में मैं लम्हारी सात है मेरी जानकी।

आपिशू : मुझे स्कूल जानी है माँ। मुझे डॉक्टर
बननी है। मुझे समाज की सेवा करनी है। आपकी
नाम रोशन करनी है। क्या मुझे एक नदी है
सपना देखने का? मुझे एक नदी है जीने का?
बताओ माँ।

माँ : है लम्हे एक। जो भी इस दुनिया में पैदा हो,
सबको है एक मेरी बच्ची। ये दुनिया देखी है लम्हने?
ये आसमान देखी है लम्हने? पता है क्यूँ खुदा ने
इस विश्व अमाण को इतना बड़ा बनाया? लम्ह जैसी
फूलों को सुगंध फेदलाने के लिफ। लम्ह जैसी
चिड़ियों को पंख फेलाकर उड़ने के लिफ।

आपिशू : फिर क्यूँ खुदा हमें माँका नदी दे रही है?



Item Code:

642

Participant Code:

320

माँ : किसने बोला खुदा माँका नही दे रही है ?

सपना पूरे करने को स्कूल जाने की क्या क्या जरूरत है ?

जिंदगी ही इस केंनात का सबसे बड़ा विद्यालय है ।

खुदा पर बरोसा रहे अ रखो मेरी बच्ची ।

संकल्प संकषी की धारे पर खो जाने का इच्छा को

आपिशूना फेंक दिया । आँखों में चमक और दिल

में आशा

बादलों की पीछे से धूप की ल्यारी ल्यारी शरानी ।

नया दिन , वही आशा । रात की सन्नाटा से विदा कहकर

दिन की संकष दौड़कर आपी । वही पुरानी फड़े दुल

कपड़े थी, वही पुरानी निरजीवन शरीर वे , पर आँखों

का चमक तो , नथी थी । आपिशूना ने दुनिया की

सबसे कीमत चीज उड़ाया । किताब । उस बाहर में ,

सपनों का सजा बहुत भारी थी पर आपिशूना कब

उस भारी का बोझ लेने को सि बराक तैयार थी ।

दो हाथों से उस सजा को स्वीकार करने का वा तैयार

थी । खुदको समाज के सामने ज़ुनेख़दार जाने को तैयार



63-ആം
കേരള സ്കൂൾ
കലോത്സവം
2025 ജനുവരി 4 മുതൽ 8 വരെ
തിരുവനന്തപുരം

Item Code:

642

Participant Code:

320

थी। उसकी शरीर छोड़ी थी पर दिल बड़ी थी।
 उसकी आँख नदी थी पर वो दोशिपारी बड़ी थी।
 उसकी जीवन कीमती थी पर सपना, ज्यादा कीमती थी।
 उसने दौड़ा, जीतनी भी तेज * उस छोड़ी जैरो दौड़ सकती
 है, उतनी ही तेज। वही घर की टेस पर पहुँचा।
 हजारों खयालें उनकी मन दिमाक से गुजर रही थी।
 उसने हाँक गहरा साँस ली। आँखें खोलकर सब जगह
 देखा। विनायक, शोधन, दर्द, विचारांग...। उसकी दिल
 में आग फैलाने लगी। संकल्प, उम्मीद, त्रासदी का
 विनायकारी आग। उस उस आग से हर दोशिपारी चीनकर
 उसने चिल्लाया, "मुझे भी एक है जीने का,
 मुझे भी एक है सपने का। मेरी खयालशा को मत
 रूको। मैं सपना पूरा कर ही रूँगा। मेरी इच्छा को
 आप लोग * चूं भी नही सकते"। अचानक आसमान
 बारिश में तब्दील हो गई, जैसे की खुद भगवान
 आकर आशिरवाद बरस रहे थे आशिरवा के
 आँखों में बारिश ... और दिल में आग... और ऊपर
 खुदा का मास्क मस्कराहट।